आंटी गुलबदन और सेक्स (प्रेम) के सात सबक-2

“प्रेम गुरु की कलम से 3. उरोजों को मसलना और चूसना शाम के कोई चार बजे होंगे। आज मैंने सफ़ेद पेंट और पूरी बाजू वाली टी-शर्ट पहनी थी। आंटी ने भी काली जीन पेंट और खुला टॉप पहना था। आज तीसरा सबक था। आज तो बस अमृत कलशों का मज़ा लूटना था। ओह… जैसे दो […] …”

Story By: prem guru (premguru2u)
Posted: Tuesday, February 16th, 2010
Categories: गुरु घण्टाल
Online version: आंटी गुलबदन और सेक्स (प्रेम) के सात सबक-2

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

आंटी गुलबदन और सेक्स (प्रेम) के सात सबक-2

प्रेम गुरु की कलम से

3. उरोजों को मसलना और चूसना

शाम के कोई चार बजे होंगे। आज मैंने सफ़ेद पेंट और पूरी बाजू वाली टी-शर्ट पहनी थी। आंटी ने भी काली जीन पेंट और खुला टॉप पहना था। आज तीसरा सबक था। आज तो बस अमृत कलशों का मज़ा लूटना था। ओह… जैसे दो कंधारी अनार किसी ने टॉप के अन्दर छुपा दिए हों आगे से एक दम नुकीले। मैं तो दौड़ कर आंटी को बाहों में ही भरने लगा था कि आंटी बोली,"ओह .. चंदू…. जल्दबाजी नहीं ! ध्यान रखो ये प्रेमी-प्रेमिका का मिलन है ना कि पति पत्नी का। इतनी बेसब्री (आतुरता) ठीक नहीं। पहले ये देखो कोई और तो नहीं है आस पास ?"

"ओह … सॉरी…. गलती हो गई" मेरा उत्साह कुछ ठंडा पड़ गया। मैं तो रात भर ठीक से सो भी नहीं पाया था। सारी रात आंटी के खयालों में ही बीत गई थी कि कैसे कल… उसे बाहों में भर कर प्यार करूंगा और उसके अमृत कलशों को चूसूंगा।

"चलो बेडरूम में चलते हैं !"

हम बेडरूम में आ गए। अब आंटी ने मुझे बाहों में भर लिया और एक चुम्बन मेरे होंठों पर ले लिया। मैं भी कहाँ चूकने वाला था मैंने भी कस कर उनके होंठ चूम लिए।

"ओह्हो … एक दिन की ट्रेनिंग में ही तुम तो चुम्बन लेना सीख गए हो !" आंटी हंस पड़ी।

जैसे कोई जलतरंग छिड़ी हो या वीणा के तार झनझनाएं हों। हंसते हुए उनके दांत तो चंद्रावल का धोखा ही दे रहे थे। उनके गालों पर पड़ने वाले गड्ढे तो जैसे किसी को कत्ल ही कर दें।

हम दोनों पलंग पर बैठ गए। आंटी ने कहा "तुम्हें बता दूं- कुंवारी लड़कियों के उरोज होते हैं और जब बच्चा होने के बाद इनमें दूध भर जाता है तो ये अमृत-कलश (बूब्स या स्तन) बन जाते हैं। दोनों को चूसने का अपना ही अंदाज़ और मज़ा होता है। सम्भोग से पहले लड़की के स्तनों को अवश्य चूसना चाहिए। स्तनों को चूसने से उनके कैंसर की संभावना नष्ट हो जाती है। आज का सबक है उरोजों या चुन्चियों को कैसे चूसा जाता है !"

कुदरत ने स्तनधारी प्राणियों के लिए एक माँ को कितना अनमोल तोहफा इन अमृत-कलशों के रूप में दिया है। तुम शायद नहीं जानते कि किसी खूबसूरत स्त्री या युवती की सबसे बड़ी दौलत उसके उन्नत और उभरे उरोज ही होते हैं।

काम प्रेरित पुरुष की सबसे पहली नज़र इन्हीं पर पड़ती है और वो इन्हें दबाना और चूसना चाहता है। यह सब कुदरती होता है क्योंकि इस धरती पर आने के बाद उसने सबसे पहला भोजन इन्हीं अमृत कलसों से पाया था। अवचेतन मन में यही बात दबी रहती है इसीलिए वो इनकी ओर ललचाता है।

"सुन्दर, सुडौल और पूर्ण विकसित स्तनों के सौन्दर्याकर्षण में महत्वपूर्ण योगदान है। इस सुखद आभास के पीछे अपने प्रियतम के मन में प्रेम की ज्योति जलाए रखने तथा सदैव उसकी प्रेयसी बनी रहने की कोमल कामना भी छिपी रहती है। हालांकि मांसल, उन्नत और पुष्ट उरोज उत्तम स्वास्थ्य व यौवन पूर्ण सौन्दर्य के प्रतीक हैं और सब का मन ललचाते हैं पर जहां तक उनकी संवेदनशीलता का प्रश्न है स्तन चाहे छोटे हों या बड़े कोई फर्क नहीं होता। अलबत्ता छोटे स्तन ज्यादा संवेदनशील होते हैं।

कुछ महिलायें अपनी देहयष्टि के प्रति ज्यादा फिक्रमंद (जागरुक) होती हैं और छोटे स्तनों को बड़ा करवाने के लिए प्लास्टिक सर्जरी करवा लेती हैं बाद में उन्हें कई बीमारियों और दुष्प्रभावों से गुजरना पड़ सकता है। उरोजों को सुन्दर और सुडौल बनाने के लिए ऊंटनी के दूध और नारियल के तेल का लेप करना चाहिए।

इरानी और अफगानी औरतें तो अपनी त्वचा को खूबसूरत बनाने के लिए ऊंटनी या गधी के दूध से नहाया करती थी। पता नहीं कहाँ तक सच है कुछ स्त्रियाँ तो संतरे के छिलके, गुलाब और चमेली के फूल सुखा कर पीस लेती हैं और फिर उस में अपने पति के वीर्य या शहद मिला कर चहरे पर लगाती हैं जिस से उनका रंग निखरता है और कील, झाइयां और मुहांसे ठीक हो जाते हैं !"

आंटी ने आगे बताया,"सबसे पहले धीरे धीरे अपनी प्रेमिका का ब्लाउज या टॉप उतरा जाता है फिर ब्रा। कोई जल्दबाजी नहीं आराम से। उनको प्यार से पहले निहारो फिर होले से छुओ। पहले उनकी घुंडियों को फिर एरोला को, फिर पूरे उरोज को अपने हाथों में पकड़ कर धीरे धीरे सहलाओ और मसलो मगर प्यार से। कुछ लड़कियों का बायाँ उरोज दायें उरोज से थोड़ा बड़ा हो सकता है। इसमें घबराने वाली कोई बात नहीं होती। दरअसल बाईं तरफ हमारा दिल होता है इसलिए इस उरोज की ओर रक्तसंचार ज्यादा होता है।

यही हाल लड़कों का भी होता है। कई लड़कों का एक अन्डकोश बड़ा और दूसरा छोटा होता है। गुप्तांगों के आस पास और उरोजों की त्वचा बहुत नाजुक होती है जरा सी गलती से उनमें दर्द और गाँठ पड़ सकती है इसलिए इन्हें जोर से नहीं दबाना चाहिए। प्यार से उन पर पहले अपनी जीभ फिराओ, चुचुक को होले से मुंह में लेकर जीभ से सहलाओ और फिर चूसो।"

मैंने धड़कते दिल से उनका टॉप उतार दिया। उन्होंने ब्रा तो पहनी ही नहीं थी। दो परिंदे जैसे आजाद हो कर बाहर निकल आये। टॉप उतारते समय मैंने देखा था उनकी कांख में

छोटे छोटे रेशम से बाल हैं। उसमें से आती मीठी नमकीन और तीखी गंध से मैं तो मस्त ही हो गया।

मेरा मिट्ठू तो हिलोरे ही लेने लगा। मुझे लगा तनाव के कारण जैसे मेरा सुपाड़ा फट ही जाएगा। मैं तो सोच रहा था कि एक बार चोद ही डालूं ये प्रेम के सबक तो बाद में पढ़ लूँगा पर आंटी की मर्जी के बिना यह कहाँ संभव था।

आंटी पलंग पर चित्त लेट गई और मैं घुटनों के बल उनके पास बैठ गया। अब मैंने धीरे से उनके एक उरोज को छुआ। वो सिहर उठी और उनकी साँसें तेज होने लगी। होंठ कांपने लगे। मेरा भी बुरा हाल था। मैं तो रोमांच से लबालब भरा था। मैंने देखा एरोला कोई एक इंच से बड़ा तो नहीं था। गहरे गुलाबी रंग का। निप्पल तो चने के दाने जितने जैसे कोई छोटा सा लाल मूंगफली का दाना हो। हलकी नीली नसें गुलाबी रंग के उरोजों पर ऐसे लग रही थी जैसे कोई नीले रंग के बाल हों। मैं अपने आप को कैसे रोक पता। मैंने होले से उसके दाने को चुटकी में लेकर धीरे से मसला और फिर अपने थरथराते होंठ उन पर रख दिए। आंटी के शरीर ने एक झटका सा खाया। मैंने तो गप्प से उनका पूरा उरोज ही मुंह में ले लिया और चूसने लगा। आह… क्या रस भरे उरोज थे। आंटी की तो सिस्कारियां ही कमरे में गूंजने लगी।

“अह्ह्ह चंदू और जोर से चूसो और जोर से …. आह… सारा दूध पी जाओ मेरे प्रेम दीवाने …. आह आज दो साल के बाद किसी ने …. आह… ओईई …माआअ ……” पता नहीं आंटी क्या क्या बोले जा रही थी। मैं तो मस्त हुआ जोर जोर से उनके अमृत कलसों को चूसे ही जा रहा था। मैं अपनी जीभ को उनकी निप्पल और एरोला के ऊपर गोल गोल घुमाते हुए परिक्रमा करने लगा। बीच बीच में उनके निप्पल को भी दांतों से दबा देता तो आंटी की सीत्कार और तेज हो जाती। उन्होंने मेरे सिर के बालों को कस कर पकड़ लिया और अपनी छाती की ओर दबा दिया। उनकी आह… उन्ह … चालू थी। मैंने अब दूसरे

उरोज को मुंह में भर लिया। आंटी की आँखें बंद थी।

मैंने दूसरे हाथ से उनका पहले वाला उरोज अपनी मुट्ठी में ले लिया और उसे मसलने लगा। मुझे लगा कि जैसे वो बिल्कुल सख्त हो गया है। उसके चुचूक तो चमन के अंगूर (पतला और लम्बा) बन गए हैं एक दम तीखे, जैसे अभी उन में से दूध ही निकल पड़ेगा। मेरे थूक से उनकी दोनों चूचियां गीली हो गई थी। मेरा लंड तो प्री-कम छोड़ छोड़ कर पागल ही हुआ जा रहा था। मेरा अंदाजा है कि आंटी की चूत ने भी अब तो पानी छोड़ छोड़ कर नहर ही बना दी होगी पर उसे छूने या देखने का अभी समय नहीं आया था। आंटी ने अपने जांघें कस कर बंद कर रखी थी। जीन पेंट में फसी चूत वाली जगह फूली सी लग रही थी और कुछ गीली भी। जैसे ही मैंने उनके चुचूक को दांतों से दबाया तो उन्होंने एक किलकारी मारी और एक ओर लुढ़क गई। मुझे लगा की वो झड़ (स्खलित) गई है।

4. आत्मरति (हस्तमैथुन-मुट्ठ मारना)

किसी ने सच ही कहा है “सेक्स एक ब्रिज गेम की तरह है ; अगर आपके पास एक अच्छा साथी नहीं है तो कम से कम आपका हाथ तो बेहतर होना चाहिए !”

सेक्स के जानकार बताते हैं कि 95 % स्वस्थ पुरुष और 50 % औरतें मुट्ठ जरूर मारते हैं। जब कोई साथी नहीं मिलता तो उसको कल्पना में रख कर ! बस यही तो एक उपाय या साधन है अपनी आत्मरति और काम क्षुधा (भूख) को मिटाने का। और मैं और आंटी भी तो इसी जगत के प्राणी थे, मुट्ठ मारने की ट्रेनिंग तो सबसे ज्यादा जरूरी थी। आंटी ने बताया था कि जो लोग किशोर अवस्था में ही हस्तमैथुन शुरू कर देते हैं वे बड़ी आयु तक सम्भोग कार्य में सक्षम बने रहते हैं। उन्हें बुढ़ापा भी देरी से आता है और चेहरे पर झुर्रियाँ भी कम पड़ती हैं।
कई बार लड़के आपस में मिलकर मुट्ठ मारते हैं वैसे ही लड़कियां भी आपस में एक दूसरे की योनि को सहला देती हैं और कई बार तो उसमें अंगुली भी करती हैं। मुझे बड़ी हैरानी

हुई। उन्होंने यह भी बताया कि कई बार तो प्रेमी-प्रेमिका (पति-पत्नी भी) आपस में एक दूसरे की मुट्ठ मारते हैं। मेरे पाठकों और पाठिकाओं को तो जरूर अनुभव रहा होगा ? एक दूसरे की मुट्ठ मारने का अपना ही आनंद और सुख होता है। कई बार तो ऐसा मजबूरी में किया जाता है। कई बार जब नव विवाहिता पत्नी की माहवारी चल रही हो और वो गांड मरवाने से परहेज करे तो बस यही एक तरीका रह जाता है अपने आप को संतुष्ट करने का।

खैर ! अब चौथे सबक की तैयारी थी। आंटी ने बताया था कि अगर अकेले में मुट्ठ मारनी हो तो हमेंशा शीशे के सामने खड़े होकर मारनी चाहिए और अगर कोई साथी के साथ करना हो तो पलंग पर करना अच्छा रहता है। अब आंटी ने मेरी पेंट उतार दी। आंटी के सामने मुझे नंगा होने में शर्म आ रही थी। मेरा 6 इंच लम्बा लंड तो 120 डिग्री पर पेट से चिपकाने को तैयार था। उसे देखते ही आंटी बोली,"वाह…. तुम्हारा मिट्ठू तो बहुत बड़ा हो गया है ?"

"पर मुझे तो लगता है मेरा छोटा है। मैंने तो सुना है कि यह 8-9 इंच का होता है ?"

"अरे नहीं बुद्धू आमतौर पर हमारे देश में इसकी लम्बाई 5-6 इंच ही होती है। फालतू किताबें पढ़ कर तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। एक बात तुम्हें सच बता रही हूँ- यह केवल भ्रम ही होता है कि बहुत बड़े लिंग से औरत को ज्यादा मज़ा आएगा। योनि के अन्दर केवल 3 इंच तक ही संवेदनशील जगह होती है जिसमें औरत उत्तेजना महसूस करती है। औरत की संतुष्टि के लिए लिंग की लम्बाई और मोटाई कोई ज्यादा मायने नहीं रखती। सोचो जिस योनि में से एक बच्चा निकल सकता है उसे किसी मोटे या पतले लिंग से क्या फर्क पड़ेगा। लिंग कितना भी मोटा क्यों ना हो योनि उसके हिसाब से अपने आप को फैलाकर लिंग को समायोजित कर लेती है। तुमने देखा होगा गधे का लंड कितना बड़ा होता है लेकिन गधी उसे भी बिना किसी रुकावट के ले पूरा अन्दर ले लेती है।"

"फिर भी एक बात बताओ- अगर मुझे अपना लिंग और बड़ा और मोटा करना हो तो मैं

क्या करूं ? मैंने कहीं पढ़ा था कि अपने लिंग पर रात को शहद लगा कर रखा जाए तो वो कुछ दिनों में लम्बा और सीधा भी हो जाता है। मेरा लिंग थोड़ा सा टेढ़ा भी तो है ?"

"देखो कुदरत ने सारे अंग एक सही अनुपात में बनाए हैं। जैसे हर आदमी का कद (लम्बाई) अपनी एक बाजू की कुल लम्बाई से ढाई गुना बड़ा होता है। हमारे नाक की लम्बाई हमारे हाथ के अंगूठे जितनी बड़ी होती है। आदमी और लिंग की लम्बाई वैसे तो वंशानुगत होती है पर लम्बाई बढ़ाने के लिए रस्सी कूदना और हाथों के सहारे लटकाना मदद कर सकता है। लिंग की लम्बाई बढाने के लिए तुम एक काम कर सकते हो- नारियल के तेल में चुकंदर का रस मिलकर मालिश करने से लिंग पुष्ट हो जाता है। और यह शहद वाली बात तो मिथक है। यह टेढ़े लिंग वाली बात तुम जैसे किशोरों की ही नहीं, हर आयु वर्ग में पाई जाने वाली भ्रान्ति है। लिंग टेढ़ा होना कोई बीमारी नहीं है। कुदरती तौर पर लिंग थोड़े से टेढ़े हो सकते हैं और उसका झुकाव ऊपर नीचे दाईं या बाईं ओर भी हो सकता है। सम्भोग में इन बातों का कोई फर्क नहीं पड़ता। ओह... तुम भी किन फजूल बातों में फंस गए ?"

और फिर आंटी ने भी अपनी जीन उतार दी। अब तो वो नीले रंग की एक झीनी सी पैंटी में थी। ओह ... डबल रोटी की तरह एक दम फूली हुई आगे से बिलकुल गीली थी। पतली सी पैंटी के दोनों ओर काली काली झांट भी नज़र आ रही थी। गोरी गोरी मोटी पुष्ट जांघें केले के पेड़ की तरह। जैसे खजुराहो के मंदिरों में बनी मूर्ति हो कोई। मैं तो हक्का बक्का उस हुस्न की मल्लिका को देखता ही रह गया। मेरा तो मन करने लगा था कि एक चुम्बन पैंटी के ऊपर से ही ले लूं पर आंटी ने कह रखा था कि हर सबक सिलसिलेवार (क्रमबद्ध) होने चाहियें कोई जल्दबाजी नहीं, अपने आप पर संयम रखना सीखो। मैं मरता क्या करता अपने होंठों पर जीभ फेरता ही रह गया।

आंटी ने बड़ी अदा से अपने दोनों हाथ अपनी कमर पर रखे और अपनी पैंटी को नीचे खिसकाने लगी।

गहरी नाभि के नीचे का भाग कुछ उभरा हुआ था। पहले काले काले झांट नजर आये और फिर स्वर्ग के उस द्वार का वो पहला नजारा। मुझे तो लगा जैसे मेरा दिल हलक के रास्ते बाहर ही आ जाएगा। मैं तो उनकी चूत को देखता ही रह गया। काले घुंघराले झांटों के झुरमुट के बीच मोटे मोटे बाहरी होंठों वाली चूत रोशन हो गई। उन फांकों का रंग गुलाबी तो नहीं कहा जा सकता पर काला भी नहीं था। कत्थई रंग जैसे गहरे रंग की मेहंदी लगा रखी हो। चूत के अन्दर वाले होंठ तो ऐसे लग रहे थे जैसे किसी चिड़िया की चोंच हो। जैसे किसी ने गुलाब की मोटी मोटी पंखुड़ियों को आपस में जोड़ दिया हो। दोनों फांकों में सोने की छोटी छोटी बालियाँ। चूत का चीरा कोई 4 इंच का तो जरूर होगा। मुझे आंटी की चूत की दरार में ढेर सारा चिपचिपा रस दिखाई दे रहा था जो नीचे वाले छेद तक रिस रहा था। उन्होंने पैंटी निकाल कर मेरी ओर बढ़ा दी। पहले तो मैं कुछ समझा नहीं फिर मैंने हंसते हुए उनकी पैंटी को अपनी नाक के पास ले जा कर सूंघा। मेरे नथुनों में एक जानी पहचानी मादक महक भर गई। जवान औरत की चूत से बड़ी मादक खुशबू निकलती है। मैंने कहीं पढ़ा था कि माहवारी आने से कुछ दिन पहले और माहवारी के कुछ दिनों बाद तक औरत के पूरे बदन से बहुत ही मादक महक आती है जो पुरुष को अपनी ओर आकर्षित करती है। हालांकि यह चूत कुंवारी नहीं थी पर अभी भी उसकी खुशबू किसी अनचुदी लौंडिया या कुंवारी चूत से कतई कम नहीं थी।

हम दोनों पलंग पर बैठ गए। अब आंटी ने मेरे लंड की ओर हाथ बढ़ाया। मेरे शेर ने उन्हें सलामी दी। आंटी तो उसे देख कर मस्त ही हो गई। मेरा लंड अभी काला नहीं पड़ा था। आप तो जानते हैं कि लंड और चूत का रंग लगातार चुदाई के बाद ही काला पड़ता है। उन्होंने पलंग के पास रखे स्टूल पर पड़ी एक शीशी उठाई और उसे खोल कर उस में से एक लोशन सा निकाला और मेरे लंड पर लगा दिया। मुझे ठंडा सा अहसास हुआ। आंटी ने बताया कि कभी भी मुट्ठ मारते समय क्रीम नहीं लगानी चाहिए। थूक या तेल ही लगाना चाहिए या फिर कोई पतला लोशन। मेरे कुछ समझ में नहीं आया पर आंटी तो पूरी गुरु थी और मेरी ट्रेनिंग चल रही थी मुझे तो उनका कहना मानना ही था। उन्होंने कुछ लोशन

अपनी चूत की फांकों पर भी लगाया और अंगुली भर कर अन्दर भी लगा लिया। एक हाथ की दोनों अँगुलियों से उन्होंने अपनी चूत की फांकों को चौड़ा किया। तितली के पंखों की तरह दोनों पंखुड़ियां खुल गई। अन्दर से एक दम लाल काम रस से सराबोर चूत ऐसे लग रही थी जैसे कोई छोटी सी बया (एक चिड़िया) ने अपने नन्हे पंख खोल दिए हों। मटर के दाने जितनी लाल रंग की मदनमणि के एक इंच नीचे मूत्र छिद्र टूथपिक जितना बड़ा। उसके ठीक नीचे स्वर्ग का द्वार तो ऐसे लग रहा था जैसे कस कर बंद कर दिया हो काम रस में भीगा हुआ। जब उन्होंने अपनी जांघें थोड़ी सी फैलाई तो उनकी गांड का बादामी रंग का छेद भी नज़र आने लगा वह तो कोई चव्वनी के सिक्के से ज्यादा बड़ा कत्तई नहीं था। वह छेद भी खुल और बंद हो रहा था। उन्होंने कुछ लोशन अपनी गांड के छेद पर भी लगाया। जब उन्होंने थोड़ा सा लोशन मेरी भी गांड पर लगाया तो मैं तो उछल ही पड़ा।

आंटी ने बाद में समझाया था कि मुट्ठ मारते समय गांड की अहम् भूमिका होती है जो बहुत से लोगों को पता ही नहीं होती। अब मेरे हैरान होने की बारी थी। उन्होंने बताया कि चूत में अंगुल करते समय और लंड की मुट्ठ मारते समय अगर एक अंगुली पर क्रीम या तेल लगा कर गांड में भी डाली जाए तो मुट्ठ मारने का मज़ा दुगना हो जाता है। मैंने तो ये पहली बार सुना था।

पहले मेरी बारी थी। उन्होंने मुझे चित्त लेटा दिया और अपना एक पैर ऊपर की ओर मोड़ने को कहा। फिर उन्होंने मेरे लंड को अपने नाजुक हाथों में ले लिया। मेरा जी कर रहा था कि आंटी उसे एक बार मुंह में ले ले तो मैं धन्य हो जाऊं। पर आंटी तो इस समय अपनी ही धुन में थी। उन्होंने मेरे लंड के सुपाड़े की टोपी नीचे की और प्यार से नंगे सुपाड़े को सहलाया। उन्होंने बे-काबू होते लंड की गर्दन पकड़ी और ऊपर नीचे करना शुरू कर दिया। वो मेरे पैरो के बीच अपने घुटने मोड़ कर बैठी थी। दूसरे हाथ की तर्जनी अंगुली पर थोड़ा सा लोशन लगाकर धीरे से मेरी गांड के छेद पर लगा दी। पहले अपनी अंगुली उस छेद पर घुमाई फिर दो तीन बार थोड़ा सा अन्दर की ओर पुश किया। मैंने गांड सिकोड़ ली।

आंटी ने बताया कि गांड को बिलकुल ढीला छोड़ दो तुम्हें बिलकुल दर्द नहीं होगा। और फिर तो जैसे कमाल ही हो गया। 3-4 हलके पुश के बाद तो जैसे मेरी गांड रवां हो गई। उनकी पूरी की पूरी अंगुली मेरी गांड के अन्दर बिना किसी रुकावट और दर्द के चली गई। मैं तो अनोखे रोमांच से जैसे भर उठा। दूसरे हाथ की नाज़ुक अँगुलियों से मेरे लंड की चमड़ी को ऊपर नीचे करती जा रही थी। मैं तो बस आँखें बंद किये किसी स्वर्ग जैसे आनंद में सराबोर हुआ सीत्कार पर सीत्कार किये जा रहा था। सच पूछो तो मुझे लंड की बजाय गांड में ज्यादा मज़ा आ रहा था। इस अनूठे आनंद से मैं अब तक अपरिचित था। आंटी ने अपना हाथ रोक लिया।

“ओह … आंटी अब रुको मत जोर जोर से करो … जल्दी …हईई।… ओह …”

“क्यों … मज़ा आया ?” आंटी ने पूछा। उनकी आँखों में भी अनोखी चमक थी।

“हाँ … बहुत मज़ा आ रहा है प्लीज रुको मत !”

आंटी फिर शुरू हो गई। कोई 5-6 मिनट तो जरूर लगे होंगे पर समय की किसे परवाह थी। मुझे लगा कि अब मेरा पानी निकलने वाला है। आंटी ने एक हाथ से मेरे दोनों अंडकोष जोर से पकड़ लिए। मुझे तो लगा जैसे किसी ने पानी की धार एक दम से रोक ही दी है। ओह … कमाल ही था। मेरा स्खलन फिर 2-3 मिनट के लिए जैसे रुक गया। आंटी का हाथ तेज तेज चलने लगा और जैसे ही उन्होंने मेरे अंडकोष छोड़े मेरे लंड ने पिचकारी छोड़ दी। पहली पिचकारी इतनी जोर से निकली थी कि सीढ़ी आंटी में मुंह पर पड़ी। उन्होंने अपनी जीभ से उसे चाट लिया। और फिर दन-दन करता मेरा तो जैसे लावा ही बह निकला। मेरे पेट और जाँघों को तर करता चला गया। इस आनंद का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता केवल महसूस ही किया जा सकता है।

और अब आंटी की मुट्ठ मारने की बारी थी। आंटी ने बताया कि चूत की मुट्ठ मारते समय

हाथों के नाखून कटे होने चाहियें और हाथ साबुन और डिटोल पानी से धुले। मैंने बाथरूम में जाकर अच्छे से सफाई की। नाखून तो कल ही काटे थे। जब मैं वापस आया तो आंटी पलंग पर उकड़ू बैठी थी। मुझे बड़ी हैरानी हुई। मेरा तो अंदाज़ा था कि वो चित लेटी हुई अपनी चूत में अंगुली डाले मेरा इंतज़ार कर रही होगी।

मुझे देख कर आंटी बोली,"अपने एक हाथ में थोड़ा सा लोशन लगा कर मेरी मुनिया को प्यार से सहलाओ !"

मैंने एक हाथ की अंगुलियों पर ढेर सारा लोशन लगा लिया और उकड़ू बैठी आंटी की चूत पर प्यार से फिराने लगा। जैसे कोई शहद की कटोरी में मेरी अंगुलियाँ धंस गई हों। चूत एक दम पनियाई हुई थी। रेशमी, मुलायम, घुंघराले, घने झांटों से आच्छादित चूत ऐसे लग रही थी जैसे कोई ताज़ा खिला गुलाब का फूल दूब के लान के बीच पड़ा हो। मैंने ऊपर से नीचे और फिर नीचे से ऊपर अंगुली फिराई। किसी चूत को छूने का मेरा ये पहला अवसर था। सच पूछो तो मैंने अपने जीवन में आज पहली बार के इतनी नज़दीक से किसी नंगी चूत का दर्शन और स्पर्श किया था। मुझे हैरानी हो रही थी कि आंटी ने अपनी झांटे क्यों नहीं काटी ? हो सकता है इसका भी कोई कारण रहा होगा।

मेरा दिल जोर जोर से धड़क रहा था। मेरा लंड फिर कुनमुनाने लगा था। मेरा जी किया एक चुम्बन इस प्यारी सी चूत पर ले ही लूं। मैं जैसे ही नीचे झुका आंटी बोली "खबरदार अभी चुम्मा नहीं !"

मुझे बड़ी हैरानी हुई। मैंने सेक्सी कहानियों में पढ़ा था कि औरतें अपनी चूत का चुम्मा देकर तो निहाल ही हो जाती है पर आंटी तो इसके उलट जा रही है। खैर कोई बात नहीं जैसा आंटी चाहेंगी वैसा ही करने की मजबूरी है। मैंने उसकी मदनमणि (भगनासा) को जब छुआ तो आंटी को एक झटका सा लगा और उनके मुंह से सीत्कार सी निकल गई। मुझे कुछ अटपटा सा लग रहा था। मैं पूरी तरह उनकी चूत को नहीं देख पा रहा था। आंटी अब

चित लेट गई और उन्होंने एक घुटना थोड़ा मोड़ कर ऊपर उठा लिया। मैं उनकी दोनों जाँघों के बीच आ गया और उनका एक पैर अपने कन्धों पर रख लिया। उन्होंने एक तकिया अपने नितम्बों के नीचे लगा लिया था। हाँ अब ठीक था।

मैंने पहले उनकी चूत को ऊपर से सहलाया और फिर धीरे धीरे उनकी पंखुड़ियों के चौड़ा किया। काम रस से सराबोर रक्तिम फांके फूल कर मोटी मोटी हो गई थी। मैंने धीरे से एक अंगुली उनकी चूत के छेद में डाल दी। आंटी थोड़ा सा चिहुंकी। अंगुली पर लोशन लगा होने और चूत गीली होने के कारण अन्दर चली गई। आंटी की एक मीठी सीत्कार निकल गई और मैं रोमांच से भर उठा।

मैंने धीरे धीरे अंगुली अन्दर बाहर करनी शुरू कर दी। आंटी ओईइ … या।… हाय।.. ईई … करने लगी। उनकी चूत से चिकनाई सी निकल कर गांड के भूरे छेद को भी तर करती जा रही थी। मुझे लगा आंटी को जरूर गांड पर यह मिश्रण लगने से गुदगुदी हो रही होगी। मैंने धीरे से अपनी अंगुली चूत से बाहर निकाली और जैसे ही उनकी गांड के छेद पर फिराई तो आंटी ने अपना पैर मेरे कंधे से नीचे कर लिया और जोर से चीखी,”ओह … चंदू ! ये अंगुली वहाँ नहीं ! रुको, मुझे पूछे बिना कोई हरकत मत करो !” बड़ी हैरानी की बात थी कि आंटी ने तो खुद बताया था कि मुट्ठ मारते समय एक अंगुली गांड में भी डालनी चाहिए अब मना क्यों कर रही हैं ?

“अपना दूसरा हाथ इस्तेमाल करो और देखो उस अंगुली में लोशन नहीं अपना थूक लगाओ। थूक लगाने से अपनापन और प्रेम बढ़ता है।”

अब मेरे समझ में आ गया। मैंने अपने दूसरे हाथ की तर्जनी अंगुली पर ढेर सारा थूक लगाया। उनकी गांड पर तो पहले से ही लोशन लगा था। हलके हलके 3-4 पुश किये तो मेरी अंगुली आंटी की नरम गांड में चली गई। वह क्या खुरदरी सिलवटें थी। मेरी अंगुली जाते ही फ़ैल कर नरम मुलायम हो गई बिलकुल रवां। धीरे धीरे अपनी अंगुली उनकी गांड

में अन्दर बाहर करने लगा। एक अनोखा आनंद मिल रहा था मुझे भी और आंटी को भी। वो तो अब किलकारियाँ ही मारने लगी थी। इस चक्कर में मैं तो उनकी चूत को भूल ही गया था। आंटी ने जब याद दिलाया तब मुझे ध्यान आया। अब तो मेरी हाथों की दोनों अंगुलियाँ आराम से उनके दोनों छेदों में अन्दर बाहर हो रही थी। बीच बीच में मैं उनकी मदनमणि के दाने को भी अपनी चिमटी में पकड़ कर भींच और मसल रहा था। आंटी का शरीर एक बार थोड़ा सा अकड़ा और उन्होंने एक किलकारी मारी। मुझे लगा कि उनकी चूत और ज्यादा गीली हो गई है। अब मैंने दो अंगुलियाँ उनकी चूत में डाल दी। मेरी दोनों अंगुलियाँ गीली हो गई थी। मेरा जी तो कर रहा था कि मैं अपनी अंगुली चाट कर देखूं कि उसका स्वाद कैसा है पर मजबूरी थी। बिना आंटी की इजाजत के यह नहीं हो सकता था। आंटी की आँखें बंद थी। मैंने चुपके से एक अंगुली अपने मुंह में डाल ली। ओह … खट्टा मीठा और नमकीन सा स्वाद तो तकरीबन वैसा ही था जो मैंने 2-3 दिन पहले उनकी पैंटी से चखा था।

मैंने अक्सर सेक्स कहानियों में पढ़ा था कि औरतों की चूत से भी काफी पानी निकलता है। पर आंटी की चूत तो बस गीली सी हो गई थी कोई पानी-वानी नहीं निकला था। आंटी ने मुझे बाद में समझाया था कि औरत जब उत्तेजित होती हैं तो योनि मार्ग में थोड़ी चिकनाहट सी आ जाती है। और जब चरमोत्कर्ष पर पहुँचती हैं तो उन्हें केवल पूर्ण तृप्ति की अनुभूति होती है। पुरुषों की तरह ना तो गुप्तांग में कोई संकुचन होता है और ना कोई वीर्य जैसा पदार्थ निकलता है।

आंटी ने मुझे बाद में बताया कि कई बार करवट के बल लेट कर (69 पोजीशन) में भी एक दूसरे की मुट्ठ मारी जा सकती है। इसमें दोनों को ही बड़ा आनंद मिलता है।

चौथा सबक पूरा हो गया था। मैंने और आंटी ने अपने अंग डिटोल और साबुन से धोकर कपड़े पहन लिए। हाँ हम दोनों ने ही एक दूसरे के अंगों को साफ़ किया था। आंटी ने मुझे

शहद मिला गर्म दूध पिलाया और खुद भी पीया। उन्होंने बताया था कि ऐसा करने से खोई ताकत आधे घंटे में वापस मिल जाती है। अगला सबक दूसरे दिन था। शाम के 7 बज रहे थे मैं घर आ गया।

Other stories you may be interested in

हैडमास्टर और स्कूल टीचर का सेक्स

नमस्कार दोस्तो, आज मैं अपनी जीवन से जुड़े कुछ हसीन लम्हों को आपके साथ बाँटने जा रहा हूँ. मेरी उम्र 56 वर्ष है. मैं 5 फ़ीट 8 इंच का हूँ. मेरा वजन लगभग 120 किलो का है. मैं काफी हट्टा […]
Full Story >>>

कॉलेज टीचर ने मुझसे अपनी चूत की प्यास बुझवायी

दोस्तो, मेरा नाम रोहित है. यह कहानी तीन साल पुरानी है. यह घटना मेरे और मेरी मैम के बीच की है. मैम का नाम बदला हुआ नाम कंचन है, उनकी उम्र तीस साल के आस पास है. मैम दिखने में […]
Full Story >>>

हवसनामा : कुंवारी छात्रा ठरकी टीचर

हवसनामा सीरीज की पहली कहानी थी : मेरी तो ईद हो गयी यह दूसरी कहानी नौरीन नाम की लड़की की है जो यूपी के एक छोटे शहर की है लेकिन राज्य की राजधानी लखनऊ के एक बोर्डिंग स्कूल में रह कर […]
Full Story >>>

कम्प्यूटर सीखने के बहाने सेक्स का खेल-2

अब तक इस सेक्स स्टोरी के पहले भाग कम्प्यूटर सीखने के बहाने सेक्स का खेल-1 में आपने जाना कि सोनल ने मुझे अपने हुस्न के हर तरह के जलवे दिखा कर फंसाने की कोशिश की … लेकिन मैंने उसके साथ […]
Full Story >>>

कम्प्यूटर सीखने के बहाने सेक्स का खेल-1

आप सभी अन्तर्वासना के पाठकों का धन्यवाद, जो आपने मेरी कहानी पड़ोसन भाभी की ठरक को पढ़कर अपने मस्त कमेन्ट मुझे भेजे. ऐसे ही आप अपना प्यार बनाए रखें. मैं पार्ट-टाईम में कंप्यूटर पढ़ाने का काम भी करता हूँ. जब […]
Full Story >>>